ख़ुद रब ﷻ ने हमें अपनी तरफ़ वसीला तलाशने का हुक्म दिया है और यह के हम अल्लाह के नेक बंदों से मोहब्बत रखें और उनका वसीला अपनी दुआओं में पेश करें और वसीले के सबब दुआएं क़ुबूल होती हैं ।

औलिया से मदद मांगों

{तफ़सीरे कबीर में पारा الم की तफ़सीर में है}

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है के जो कोई जंगल में फँस जाये तो कहे

اعينوني عباد الله يرحمك الله

"ए अल्लाह के बंदों ! मेरी मदद करो रब तुम पर रहम फरमाये।"

औलिया मदद करते हैं

औलियाए कीराम , अल्लाह की अता करदा क़ुव्वत से मदद करते हैं। जैसा की क़ुरआन में है :

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ المائدة55

यानी ए मुसलमानों तुम्हारा मददगार अल्लाह और रसूल और वह मुसलमान हैं जो ज़कात देते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं ।

ज़ियारत का बहतर तरीक़ा

ज़ियारत का बहतर तरीक़ा यह है की पैर की जानिब से जाकर क़ब्र के मुंह के सामने खड़ा हो और यह दुआ पढ़े

السَّلامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيارِ مِنَ المؤْمِنينَ وَالْمُسْلِمين، وَإِنَّا إِنْ شاءَ اللهُ بِكُمْ لاحِقون، نَسْأَلُ اللهَ لنا وَلَكُمُ العافِيَة

फ़िर तीन बार या पाँच बार दुरुद शरीफ़ पढ़े और फिर जितना हो सके क़ुरआन की तिलावत करे और ईसाले सवाब करे,बहतर यह है की क़ब्रे औलिया के पास न जाये बल्कि 4 हाथ के फ़ासले पर खड़ा रहे के इसमें ज़्यादा अदब है। फिर साहिबे मज़ार के वसीले से अल्लाह की बारगाह में दुआ करे।

(माख़ूज़ फ़तावा रज़वीय्या, बाहरे शरीअत , रद्दुल मुहतार)

❁❁❁

An Najm Islamic Media

क़ुरआन , हदीस व फ़िक़्ह के मसाइल को आम करने और आम मुस्लमानों को अपने दीन से आशना कराने की एक कोशिश का नाम है "अन नज्म इस्लामिक मीडिया" (*An Najm Islamic Media*) जो की यू-ट्यूब के ज़रिये पैग़ामे इस्लाम को आम कर रही है। इस चैनल को सबस्क्राइब करके आप सुन सकेंगे इस्लाही बयानात, फ़िक़्ही मसाइल, दर्से हदीस, दर्से क़ुरआन, तिलावते क़ुरआन, नातो मन्क़बत और इश्क़े मुस्तफ़ा का जाम पिलाते हुए पुर कैफ़ ख़ुसूसी बयानात। जय्यद उलेमा व मुफ़्तीयाने किराम की ज़ेरे निगेहदाश्त यह सभी मुस्लमानों के लिये एक आसान ज़रिया है। क़ुरआन, हदीस व फ़िक़्ह सीखने का।

तो अभी यू-ट्यूब पर ***An Najm Islamic Media*** को सबस्क्राइब करें।

हज़राते गिरामी ! इसी तरह के और भी बहुत सी दीनी किताबें , फोल्डर , पैम्फलेट वग़ैराह "ज़ीरो प्रॉफिट" ***Zero Profit*** पर हमारी तरफ़ से छापे जाते हैं अगर आप इनमें ताव्वुन या इश्तिहार देना चाहते हैं तो हमसे राब्ता क़ायम करें 9837777689 और आपसे गुज़ारिश है की हमारे चैनेल को सुन कर अपना अमली ताव्वुन करें और अपने तास्सुरात, मशवरे , सलाह हमें ज़रूर दें और आप यह सब इसी न0 पर हमें व्हट्सएप (Whatsapp) के ज़रिये भी दे सकते हैं।

अल्लाह ﷻ हमें अपने हबीब ﷺ के सदक़े दीने मतीन की ख़िदमत का जज़्बा अता फ़रमाये। आमीन!

786/92



अमबिया,औलिया और तमाम उम्मत का क़दीम अमल

यानी

ज़ियारते क़ुबूर

★ अल्लाह ﷻ का हर प्यारा ज़िन्दा है

★ औलिया अल्लाह की बारगाह में दुआ क़ुबूल होती है

★ हुज़ूर ﷺ ने ज़ियारत का हुक्म दिया है

★ क्या मज़ार पर जाना ग़ैरे ख़ुदा की इबादत है ?

★ वसीला तलाशो !

★ ज़ियारत का बेहतर तरीक़ा

पेशकश

अहले सुन्नत व जमाअत
शायकरदा :
अन नज्म इस्लामिक मीडीया
मो0 9634589431,8527632019,9837777689

بسم الله الرحمن الرحيم

पेशे लफ़्ज़

نحمده و نصلي على رسوله الكريم

हम्द है उस रब की जिसने बादे मौत भी अपने ख़ास बंदों को वह ताक़त अता की जिससे वह आम मोमिनों की हाजत रवाई करते हैं। और कामिल दुरुद उसके मेहबूब ﷺ पर जिनके सदक़े अम्बिया व औलिया को यह क़ुव्वत अता हुई।

हज़राते गिरामी अम्बिया व औलिया की वह ज़ात है जो अल्लाह की अता करदा क़ुव्वत से दूसरे बंदों की हाजत रवाई करते हैं और जिनको मौत के बाद भी हयात का मुज़्दाये जाँ फ़िज़ा मिला है और जिनको एक पल के लिये मौत आई मगर फिर उनके रब ने उंहे जिंदा फ़रमा दिया और वह आज भी जिंदा हैं।

रसूले अरबी ﷺ के दौर से पहले भी लोग अम्बिया की कब्रों पर जाया करते थे और उनके दर से उनकी दुआएँ क़ुबूल होती थीं। ख़ुद हुज़ूर ﷺ ने शोहदा की कब्रों की ज़ियारत फ़रमायी है और आप के बाद इस दौर तक तमाम उम्मत इसपर अमल कर रही है और फ़ैज़याब हो रही है।

पहले ज़रूरी समझता हूँ के हयाते औलिया पर एक दलील पेश करदी जाये।

हर अल्लाह का प्यारा जिंदा है

(शरहुस्सुदूर स0 86 पर है)

अबू अली عليه رحمة से रावी है :

मैंने एक फ़कीर को क़ब्र में उतारा, जब कफ़न खोला उन का सर ख़ाक पर रख दिया के अल्लाह उनकी ग़ुरबत पर रहम फ़रमाये।

फ़कीर ने आँखें खोल दीं और मुझसे फ़रमाया :

يا ابا علي اتذللني بين يدي من يدللني

यानी "ए अबू अली तुम मुझे उस के सामने ज़लील करते हो जो मेरे नाज़ उठाता है ?"

मैंने अर्ज़ की ए मेरे सरदार ! क्या मौत के बाद जिंदगी है? फ़रमाया : بل أنا حي و كل محب الله حي لا نصرك بجاهي غدا

यानी "मैं जिंदा हूँ , और अल्लाह का हर प्यारा जिंदा है , बेशक वो वजाहतो इज़्ज़त जो मुझे रोज़े क़ियामत मिलेगी उस से मैं तेरी मदद करूँगा।

औलिया अल्लाह की बारगाह में दुआ क़ुबूल होती है

हज़रते ज़करीया عليه السلام अल्लाह ﷻ के नबी थे और आप बहुत बूढे हो चुके थे मगर आपकी कोई औलाद न थी, हज़रते मरयम رضي الله عنها जो के आप की परवरिश में पली बड़ी थीं वह जिस जगह नमाज़ पढ़ती थीं वहाँ बे मौसम के फल आया करते थे एक दिन हज़रते ज़करीया عليه السلام ने यह देखा तो कहा के मरयम यह कहाँ से आए ? , आपने फ़रमाया "यह अल्लाह ﷻ के अता करदा हैं"। तो हज़रते ज़करीया عليه السلام के दिल में ख़याल आया के जो रब मरयम को बे मौसम फल दे सकता है वह मुझे भी औलाद अता कर सकता है जबकि मेरी औलाद होने का मौसम जा चुका है।

फिर आपने दुआ करी

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ال عمران ٣٨

"यहां, पुकारा ज़करीया अपने रब को बोला ए रब मेरे ! मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद, बेशक तू ही है दुआ सुनने वाला।"

हज़रते ज़करीया عليه السلام पहले भी औलाद की दुआ कर चुके थे मगर अल्लाह की मर्ज़ी, के दुआ क़ुबूल न हुई और जब हज़रते मरयम رضي الله عنها की इबादत की जगह दुआ मांगी तो अल्लाह ﷻ ने आप की दुआ क़ुबूल फ़रमायी और औलाद की बशारत दी, चुनांचे क़ुरआन में है :

أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ ال عمران ٣٩

"बेशक अल्लाह आपको मुज़्दा देता है याहया का।"

इस वाक़्ये से चंद ज़रूरी बातें पता चलीं :

एक तो यह के हज़रते मरयम رضى الله عنها जो के अल्लाह ﷻ की वलीय्या हैं उनकी इबादत की जगह में अल्लाह ﷻ ने बेपनाह बरकत रखी थी, दूसरी यह के वलियों के दर पर जाना भी साबित हो गया, और यह भी के उनके दर पर दुआ करनी चहिये और वह पूरी भी होती हैं। यहां सोचने की एक बात यह है कि जब हज़रते मरयम رضى الله عنها की इबादत की जगह में अल्लाह ने ऐसी बरकत रखी है तो उन दरगाहों का क्या हाल होगा जिनमें ख़ुद वलियों के जिस्म मौजूद हैं ? **बेशक वहां तो फैज़ के दरया बह रहे होंगे !**

हुज़ूर ﷺ ने ज़ियारत का हुक्म दिया

1. {मुस्लिम जिल्द अव्वल किताबुल जनाइज़ की हदीस }

हज़रते बूरीदा رضي الله عنه ने कहा के रसूले ककरीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के मैंने तुम लोगों को कब्रों की ज़ियारत से मना किया था (अब मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ) उन की ज़ियारत करो।

2. {इब्ने माजा जिल्द अव्वल अब्वाब फिल जनाइज़ में हदीस है}

हज़रते इब्ने मसूद رضي الله عنه से रिवायत के हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया "मैं ने तुम लोगों को कब्रों की ज़ियारत से मना किया था तो अब मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ कि उनकी ज़ियारत करो इस लिये की ज़ियारत करना दुनिया से बेज़ार करता है और आख़िकरत की याद दिलाता है।

क्या मज़ार पर जाना ग़ैरे ख़ुदा की इबादत है ?

{तफ़सीरे सावी जिल्द अव्वल स0 245 पर है}

औलिया अल्लाह की ज़ियारत के सबब मुसलमानों को इस ख़याल से काफ़िर केहना के उन की ज़ियारत इबादते ग़ैरे ख़ुदा है , यह खुली हुई गुमराही है और ख़सारे का सबब है, ज़ियारते औलिया तो الحب في الله (यानी अल्लाह के लिये मोहब्बत करना) है। यहाँ से यह बात साफ़ हुई के जो मुस्लमानों को मज़ार पर जाने से रोकते हैं और जाने वाले मुसलमानों को कब्रों को पूजने वाला कहते हैं वह गुमराह लोग हैं।

वसीला तलाशो !

क़ुरआन में अल्लाह ﷻ ने मोमिनों से फ़रमाया :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ المائدة ٣٥

"ए ईमान वालों ! अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला तलाश करो।"